परम्परागत कुटीर उद्योगों से संबंधित वंशकार व चर्मकार परिवारों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि, एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुलक्षणा त्रिपाठी*

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में परम्परागत कुटीर उद्योगों से संबंध रखने वाले परिवारों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया । साथ ही साथ यह भी देखा गया है कि शैक्षिक उपलब्धि को शैक्षिक अभिरूचि किस तरह से प्रभावित करती है। इस हेतु परम्परागत कुटीर उद्योगों के परिवारों से वंशकार एवं चर्मकार समूह के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया है । इस हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं, उनका शैक्षिक उपयोग के संबंध में विस्तृत विवेचन भी किया जा रहा है । शैक्षिक अनुसंधान क्षेत्र में यह शोध नवीनतम एवं अत्यंत मौलिक है।

प्रस्तावना

प्रायः देखने में आया है कि परम्परागत कुटीर उद्योगों का हमारी देश की अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान रहा है । परम्परागत कुटीर उद्योगों में संलग्न परिवारों के लिए आय का प्रमुख स्त्रोत कुटीर उद्योग होने के कारण उनका पूरा परिवार उनके इस कार्य में सहयोग प्रदान करता है । कुटीर उद्योगों की श्रेणी में लोहे, चमड़े, लकड़ी, मिट्टी, बांस के उद्योग आदि आते हैं। परम्परागत कुटीर उद्योगों के परिवारों के बालक–बालिका भी अपने माता–पिता को सहयोग देने के कारण शैक्षिक रूप से पिछड़े पाये गये उसका मुख्य कारण बालक–बालिका की शैक्षिक अभिरूचि कम होना है निश्चित ही अगर बालक–बालिकाओं की शैक्षिक अभिरूचि में वृद्धि की जाये तो उसका सकारात्मक प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

तारा, पी (1980) ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक समूहों के पूर्व किशोरावस्था के छात्रों के आत्म–प्रत्यय, आकांक्षा स्तर एवं अभिरूचि का अध्ययन किया और पाया कि पूर्व किशोरावस्था के बच्चों में आत्म–प्रत्यय, आकांक्षा स्तर और अभिरूचि के मध्य लगभग नहीं के बराबर संबंध पाया गया।

मुथ्थू मनिकम आर, अन्नामलाई वि.वि. (1992) बच्चों में तर्क क्षमता सामाजिक आर्थिक स्तर एवं व्यवसायिक अभिरूचियॉ के संदर्भ में उनकी शैक्षणिक उपलब्धियॉ का अध्ययन में पाया कि परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति का बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सीधा असर पड़ता है। बच्चे की व्यवसायिक अभिरूचि के क्षेत्र में बढ़ी सीमा तक प्रतिबद्धता उसके परिवार के सामाजिक आर्थिक ढॉचे पर निर्भर करती है।

रवीन्द्र नाथन, ए.के. (1983) ने उच्चतर माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय की उपलब्धि, विज्ञान अभिरूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य पर शिक्षण के माध्यम के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिसमें उ.मा. कक्षा के 890 विद्यार्थियों को लिया गया जो अंग्रेजी एवं मलयाली माध्यम से पढ़ रहे हैं। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की विज्ञान विषय में उपलब्धि, विज्ञान में अभिरूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य स्तर 'मलयाली माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च था। जब समूहों को बौद्धिक स्तर, अभिरूचि एवं मानसिक स्वास्थ्य स्तर के आधार पर तुल्य किया गया तब भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का स्तर अपेक्षाकृत उच्च था। जब समूहों को उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं उच्च मानसिक स्वास्थ्य स्तर के आधार पर तुल्य किया गया तो विज्ञान विषय में उपलब्धि एवं विज्ञान अभिरूचि पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

दत्ता पी.सी. (1982) ने विभिन्न माध्यमों की शालाओं के विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी आदतों पर

*हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय जबलपुर (मध्य प्रदेश)

कार्य किया जिसमें उनके सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके अध्ययन संबंधी सामग्री के चयन संबंधी अभिवृत्ति का, आवश्यकता एवं सम्मान के बारे में पता चल सके। परिणामों से स्पष्ट होता है कि अंग्रेजी माध्यम की शालाओं में अधिक विस्तृत पाठ्यक्रम था। साथ ही अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में अन्य विषयों के प्रति रूझान था। अंग्रेजी माध्यम एवं शासकीय शालाओं के विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अभिरूचि की मात्रा अधिक थी।

शोध के उद्देश्य

1. शहरी एवं ग्रामीण परम्परागत कुटीर उद्योगों के वंशकार परिवार से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण परम्परागत कुटीर उद्योगों के चर्मकार परिवार से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. शहरी एवं ग्रामीण परम्परागत कुटीर उद्योगों के वंशकार परिवार से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण परम्परागत कुटीर उद्योगों के चर्मकार परिवार से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

शोध विधि

शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन के लिए ''सर्वेक्षण अनुसंधान'' पद्धति का प्रयोग किया है।

शोध उपकरण

1. शैक्षिक अभिरूचि– इसका निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया जिसमें प्रश्नों की संख्या 25 है तथा रेटिंग स्केल का आधार पॉच बिन्दु मापनी (0,1,2,3,4) रखा गया था।
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण– विद्यार्थियों की पिछली वार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात की गई।

शोध–योजना एवं न्यादर्श

सर्वप्रथम विद्यालयों से संबंधित परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से सर्वेक्षण अनुसंधान विधि द्वारा प्रदत्त संकलन किया गया।

पहले शैक्षिक अभिरूचि मापनी का प्रशासन करते हुए उनके तदुपरांत गणना का कार्य किया गया। गणना के उपरांत प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों (मध्यमान, प्रमाप, विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं प्रसरण विश्लेषण) द्वारा विश्लेषण किया गया।

विवरण	विद्यालय संख्या	विद्यार्थी		
		वंशकार	चर्मकार	योग
शहरी	20	37	42	79
ग्रामीण	20	46	36	82
योग	40	83	78	161

परिणामों का विश्लेषण, परम्परागत कुटीर उद्योगों के वंशकार एवं चर्मकार परिवार के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या निम्न है –

सारणी क्रमांक–1
वंशकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि से संबंधित सार्थकता संबंधी परिणाम

समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी' मूल्य
शहरी	40.68	11.04			
ग्रामीण	50.65	12.27	1.812	5.51	∠0.01

स्वतंत्रता के अंश–81

0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान= 1.99

0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.64

उपरोक्त तालिक से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी जो कि वंशकार समूह के हैं उनकी शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 5.51 आया है जो कि 0.01 स्तर के निर्धारित 2.64 मान से अधिक है।

अतः दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर है।

सारणी क्रमांक–2

चर्मकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि से संबंधित सार्थकता संबंधी परिणाम

समूह	मध्यमान	प्रभाव विचलन	त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी' मूल्य
शहरी	44.05	8.95			
ग्रामीण	50.56	12.35	1.727	3.77	∠0.01

स्वतंत्रता के अंश–76

0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान= 2.00

0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान=2.65

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी जो कि चर्मकार समूह के है उनकी शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 3.77 आया है जो क 0.01 स्तर के निर्धारित मान 2.65 से अधिक है। अतः सांख्यिकीय दृष्टिकोण के अनुसार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण चर्मकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर है।

सारणी क्रमांक–3

वंशकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित सार्थकता संबंधी परिणाम

समूह	मध्यमान	प्रभाव विचलन	त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी' मूल्य
शहरी	56.62	8.33			
ग्रामीण	49.13	5.86	1.61	4.65	∠0.01

स्वतंत्रता के अंश–81

0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान= 1.99

0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान =2.64

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थी जो कि वंशकार समूह के हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 4.65 आया है जो कि 0.01 स्तर के निर्धारित मान 2.64 से अधिक है। अतः सांख्यिकीय दृष्टिकोण के अनुसार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण वंशकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

सारणी क्रमांक–4

चर्मकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित सार्थकता संबधी परिणाम

समूह	मध्यमान	प्रभाव विचलन	त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी' मूल्य
शहरी	45.23	7.40			
ग्रामीण	45.27	7.46	1.68	0.023	> 0.05

स्वतंत्रता के अंश–76

0.05 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान= 1.99

0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता हेतु मान=2.64

उपरोक्त तालिका से प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण जो कि चर्मकार समूह के हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.023 आया है जो कि 0.05 विश्वास के स्तर के न्यूनतम मान से अत्यंत कम है । अतः इन दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण वंशकार एवं चर्मकार दोनों समूहों में शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया गया है साथ ही साथ वंशकार की शैक्षिक उपलब्धि में भी सार्थक अंतर आया है । परन्तु

चर्मकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

शहरी एवं ग्रामीण वंशकार एवं चर्मकार दोनों समूहों में शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर आने का प्रमुख कारण है कि वंशकार व चर्मकार दोनों समूहों में शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर आने का प्रमुख कारण है कि वंशकार व चर्मकार समूहों के अभिभावकों की शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है जिसके कारण उनकी शैक्षिक अभिरूचि में अंतर है । वे अपने बच्चों को अपने परम्परागत व्यवसाय में लगाये रखने के साथ साथ उनकी शिक्षा पर भी ध्यान दे रहे अगर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में वृद्धि होती तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। साथ साथ देखा गया कि वंशकार समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में भी अंतर पाया गया है । परन्तु चर्मकार समूहों के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

ई. गैरिट हैनरी,शिक्षा और मनोविज्ञान में साख्यिकीय का प्रयोग,कल्याण पब्लिशर्स,लुधियाना 1966

कपिल एच.के ''अनुसंधान विधियाँ'' प्रथम संस्करण, हरप्रसाद भार्गव, कचहरी घाट,आगरा, पृ.69,1976

कपिल एच.के.''साख्यिकीय के मूल तत्व'' द्वितीय संस्करण,विनोद पुस्तक मंदिर,कचहरी घाट, आगरा, पृ. स.98,1980

सुलेमान,डॉ.मोहम्मद,उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, पृ. सं.364–375–2007

श्रीवास्तव डी.एन.,सांख्यिकीय एवं मापन,नवीन संस्करण विनोद पुस्तक मंदिर रागेय राघव मार्ग आगरा–2–2003

वर्मा,डॉ.प्रीति,आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2 पृ.सं. 609–665–1977